होली है भाई होली है, बुरा न मानो होली है

आज मुबारक, कल मुबारक
होली का हर पल मुबारक
रंग बिरंगी होली में
हमारा भी एक रंग मुबारक

राष्ट्रदूत आज भी अपनी इस अनूठी और बांकी परम्परा का हंसी खुशी से निर्वहन कर रहा है। होली मौजमस्ती का त्योंहार है। इसे बावला त्योंहार भी कहा जाता है। ये सिर्फ एक होली का विनोद मात्र है इसे दिल पर न ले। यह हंसी मज़ाक के साथ सम्मानित करने का एक शानदार तरीका है। यह यादों को और अधिक जीवंत बना देता है। बुरा न मानो होली है की करतल ध्वनि होली की लंबी परंपरा का अभिन्न अंग है। इन उपाधियों को सहज ढंग से स्वीकार करना चाहिए और फिर अगली होली का इंतजार करना चाहिए। आपके अपने राष्ट्रदूत को सदा की तरह होली-विशेषांक के लिए काफी तैयारी करनी पड़ी। दिल में धुकुर-धुकुर मची रही कि सही वक्त पर निकाल पाएंगे या नहीं! उपाधियाँ सही ढंग से दी गई या नहीं। बाकी सामठी भी पाठकों की रूचि के अनुरूप है या नहीं। पर अंतत: हम इसमें कामयाब हुए। लीजिए, अब यह आपके हाथों में है। पढ़िए, मजा लीजिए और टीपें छोड़िए कि यह आपको कैसा लगा । आप सभी को राष्ट्रदूत परिवार की ओर से होली की शुभकामनाएं।

रंगों की बहार आई,
होली की मस्ती छाई
उपाधियों की बौछार,
ये है होली का त्योहार
हास्य व्यंग्य के साथ राष्ट्रदूत ने
खोला उपाधियों का पिटारा

रंगों की वर्षा, गुलाल की फुहार
सूरज की किरणें, खुशियों की बौछार
चन्दन की खुशबू, अपनों का प्यार
मुबारक हो आपको होली का त्योहार

होली के खूबसूरत रंगों की तरह आप सभी को राष्ट्रदूत परिवार की ओर से बहुत-बहुत रंगों भरी, उमंगों भरी शुभकामनाएं

होली 2026

2 मार्च, 2026 : होलिका दहन
3 मार्च, 2026 : रंगवाली होली

होली का नाम लेते ही रंगों की बौछार, हंसी-ठिठोली और मस्ती भरी महफिल का ख्याल आता है। यह त्योहार न सिर्फ रंगों का, बल्कि दिलों को जोड़ने, गुदगुदाने और रिश्तों में मिठास घोलने का भी पर्व है। इस दिन हर कोई पुराने गिले-शिकवे भुलाकर एक-दूसरे को रंग लगाता है और प्रेम का इजहार करता है। कहते हैं कि होली पर दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं, और हर चेहरा मुस्कान से खिल उठता है। रंगों से सराबोर यह त्योहार खुशियों की सौगात लेकर आता है। गुलाल की महक, पकवानों की मिठास और चारों ओर मस्तीभरे रंग त्योहार के माहौल को और भी खास बना देते हैं। गली-मोहल्लों में गूंजते होली के गीत, पिचकारियों से उड़ते रंग और हंसी-मजाक की धूम इसे और भी यादगार बना देती है। हँसो, हंसाओं और हँसी उड़ाओ यह दिन है हँसी ठट्ठे के, ठिठोली के, बोलीठोली के, मखौल के, उपहास के, व्यंग्य के अल्मस्ती के, अनुराग, राग और रागरंग के। होली पर जी भर के भड़ास निकाली जाती हैं, बोलियों की गोलियां चलाई जाती हैं, पिचकारी से बम फोड़ देते हैं, फिर कहते हैं- बुरा न मानो होली है। जो बुरा मानें उन से कह दीजिए - बुरा ना मानो होली है। होली रंग, व्यंग्य और हंसी-मजाक से भरा पावन पर्व है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। बुरा न मानो होली है के व्यंग्य के साथ, यह त्योहार रिश्तों की कड़वाहट मिटाकर नए रंग भरने का संदेश देता है। रंग-बिरंगे संदेशों, फाग गीतों और मस्ती भरे कटाक्षों के माध्यम से होली का उत्साह और सामूहिकता व्यक्त की जाती है।होली केवल रंगों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह जीवन की विविधता, उल्लास और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक भी है। होली का उत्सव लोगों के बीच प्रेम, भाईचारे और सामाजिक मेल-जोल का प्रतीक है। होली का त्योहार हमें सिखाता है कि जीवन में हर भावना, हर परिस्थिति का स्वागत खुले मन से करें। यह पर्व प्रेम, सद्भाव, आनंद औरसांस्कृतिक जागरण का एक दिव्य अवसर है, जो हमें जीवन को संपूर्णता से जीने की प्रेरणा देता है।चारो तरफ होली का खुमार छाया हुआ है। रंग बिरंगे रंगों से वातावरण सराबोर है। होली का नाम सुनते ही हमारा तन मन रंगों, उत्साह और स्वादिष्ट व्यंजनों की सुगंध से भर जाता है। मिठाइयों और पकवानों की खुशबू मन को बेकाबू कर रही है, होली के गीतों से हृदय में उमंग की लहर दौड़ रही है।यह रंगों का पर्व खुशी, मेल-जोल और भाईचारे का प्रतीक रहा है, लेकिन समय के साथ इसमें कई बदलाव आए हैं। पुराने समय की होली और आज की होली में काफी अंतर देखने को मिलता है. जहां पहले होली पूरे गली मोहल्ले और गांव के लोगों के साथ मिलकर खेली जाती थी, वहीं अब यह एक सीमित दायरे में सिमट गई है।

होली गीत

सदभावों के रंग चलो हम, मिलकर भर ले झोली में।
नव पल्लव सा प्यार करे सब, रंगों की इस होली में।
ढोल बजा के भंग चढ़ा के, सबके रंग लगायेंगे।
धूम मचा के संग नचा के, होली पर्व मनायेंगे।
प्रेम मिलन के यार तराने, सच्चाई इस होली की,
अपनेपन के रंग लगाकर, सबका मन बहलाएंगे।
आओ हम नफरत को त्यागे, मिश्री घोलें बोली में।
नव पल्लव सा प्यार करे हम, रंगों की इस होली में।
डालेंगे हम रंग प्रेम का, हँसते-हँसते तन मन पर।
सजनी का वह प्यार भरा मन, हम उसका पाये जी भर।
फिर ये स्वप्न सजायें हर दिन, नवगानों की खुशियों के,
लेकिन गोरी आकर मुझको, एक बार तो कर दो तर।
भर जाता है बस मन मेरा, तेरी हँसी ठिठोली में।
नव पल्लव सा प्यार करें हम, इस रंगों की होली में।
कहें भारती व्यास हृदय से, बंधन कभी नहीं छूटे।
जिस रंगों में अपनी खुशियां, बनी रहे यह ना टूटे।
भक्ति हो प्रहलाद भक्त सी, अमर जिंदगी कर देती,
फागुन में यूँ चढ़ी तरंगे, सब कुछ अपना ना लूटे।
संग तुम्हारे सदा जियेंगे, हम सब बनकर हमजोली।
नव पल्लव सा प्यार करे हम, इस रंगो की होली में।

- मंगल व्यास भारती

पहले होली सिर्फ रंगों का खेल नहीं, बल्कि एक पारिवारिक और सामाजिक उत्सव हुआ करता था। लोग एक-दूसरे के घर जाकर रंग लगाते, गुलाल उड़ाते और बड़ों से आशीर्वाद लेते थे। हल्दी, मुल्तानी मिट्टी, टेसू के फूल और अन्य प्राकृतिक रंगों से होली खेली जाती थी, जिससे न त्वचा को नुकसान होता था और न ही आंखों में जलन। वक्त के साथ होली का स्वरूप भी बदल गया है. अब पहले जैसी आत्मीयता और भाईचारा कम दिखाई देता है। जहां पहले गुलाल और हल्दी से होली खेली जाती थी, अब वहां चमकीले, पक्के और केमिकल युक्त रंगों का उपयोग किया जाने लगा है, जिससे त्वचा संबंधी समस्याएं बढ़ गई हैं। कई लोग पानी बचाने के नाम पर सूखी होली खेलने लगे हैं, लेकिन इस दौरान हानिकारक रंगों का अधिक इस्तेमाल होता है। पहले होली शालीनता से खेली जाती थी, लेकिन अब शराब और भांग का अत्यधिक सेवन बढ़ गया है, जिससे झगड़े और अप्रिय घटनाएं बढ़ गई हैं। समय के साथ परंपराओं में बदलाव आना स्वाभाविक है, लेकिन त्योहारों की मूल भावना को बनाए रखना भी जरूरी है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि होली को फिर से भाईचारे और प्रेम के रंगों से सराबोर किया जाए। प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाए और अनावश्यक नशे से बचा जाए ताकि होली का असली आनंद बना रहे। होली सिर्फ रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि प्यार, अपनापन और भाईचारे का प्रतीक है।होली की शुरुआत होलिका दहन से होती है। इस दिन छोटी होली मनाई जाती है और इसके अगले दिन रंग वाली होली खेली जाती है।होली भारत का बहुत ही लोकप्रिय और हर्षोल्लास से परिपूर्ण त्यौहार है। लोग चन्दन और गुलाल से होली खेलते हैं। प्रत्येक वर्ष मार्च माह के आरंभ में यह त्योहारमनाया जाता है। लोगों का विश्वास है कि होली के चटक रंग ऊर्जा, जीवंतता और आनंद के सूचक हैं। होली की पूर्व संध्या पर बड़ी मात्रा में होलिका दहन किया जाता है और लोग अग्नि की पूजा करते हैं।होली का नाम सुनते ही मन में उत्साह की लहर दौड़ पड़ती है। हवा में अबीर-गुलाल की महक घुल जाती है और चारों ओर खुशियों के रंग बिखर जाते हैं। गली-मोहल्लों में गूंजते होली के गीत, पिचकारियों से उड़ते रंग और हंसी-मजाक की धूम इसे और भी यादगार बना देती है। ये सिर्फ रंगों का खेल नहीं, बल्कि प्यार, अपनापन और उमंग का पर्व है, जहां दुश्मनी दोस्ती में बदल जाती है और गिले-शिकवे मिट जाते हैं। लेकिन होली का महत्व सिर्फ मस्ती तक सीमित नहीं है। इसके पीछे पौराणिक कथाएँ, ऐतिहासिक परंपराएं और सामाजिक संदेश छुपे हैं। ये बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, तो कहीं भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम का रंगीन उत्सव। एक जमाना था जब पत्र पत्रिकाओं में होली पर जाने माने लोगों को व्यंग्य भरी उपाधियाँ बाँटी जाती थीं। गली और कॉलोनियों में होली के हुल्लड़बाज़ छापेखाने में छपवा कर या हाथ से लिख कर उपाधियों के नाम पर कटाक्ष के परचे बाँटते थे। सवेरे जाग होने पर बड़ा हंगामा होता था। समय के साथ समाचार पत्रों में होली की उपाधियाँ आने लगी। पाठक होली का बेसब्री से इंतजार करते है ताकि अपने मनपसंद व्यक्ति की उपाधि चाव के साथ देख सके। होली आये और राष्ट्रदूत का होली विशेषांक नहीं आये यह तो हो ही नहीं सकता।

होली परिशिष्ट के अतिथि संपादक वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार बाल मुकुंद ओझा

सियासत के सूरमा

हरिभाऊ बागड़े	- कुछ अलग बात है हममें
वासुदेव देवनानी	- बड़ी पाठशाला के गुरूजी
भजनलाल शर्मा	- मन चंगा तो कठौती में गंगा
ओम बिरला	- संकट मोचक
दीया कुमारी	- बजटाधिपति
प्रेमचंद बैरवा	- मन मन भाये मूंड हिलाये
डॉ. किरोड़ीलाल मीणा	- संघर्ष ही जीवन है
गजेंद्र सिंह खींवसर	- अंधेरे में उजाला
राज्यवर्धन सिंह राठौर	- महा प्रबधक
बाबू लाल खराडी	- मन लागा मेरा यार फकीरी में
मदन दिलावर	- बड़ा कबूतर
जोगाराम पटेल	- मिर्ची लगी तो मैं क्या करूं
सुरेश सिंह रावत	- पढ़े फारसी बेचे तेल
अविनाश गहलोत	- उड़न बछेड़ा
ज़ोराराम कुमावत	- ऊंची दूकान, फीका पकवान
हेमंत मीणा	- बाबाजी का चिमटा
कन्हैया लाल चौधरी	- काजल की कोठरी
सुमित गोदारा	- कांटा लगे ना कंकर
ओटा राम देवासी	- अलीबाबा
डॉ. मंजु वाघमार	- फुलौरी बिना चटनी कैसे बनी
विजय सिंह चौधरी	- छुपा रुस्तम
के के बिश्नोई	- नाम बड़े और दर्शन छोटे
जवाहर सिंह बैडम	- रमता जोगी
संजय शर्मा	- सबका साथ, सबका विश्वास
गौतम कुमार	- अजगर करे ना चाकरी
झाबर सिंह खर्रा	- हम चौड़ा और गली सांकड़ी
हीरा लाल नागर	- कोई मेरी भी तो सुनो
ओम बिरला	- महत्वाकांशी
गजेंद्र सिंह शेखावत	- मोदी की मेहरबानी
भूपेंद्र यादव	- जीवंत जीवटता
अर्जुन मेघवाल	- यथा नाम तथा गुण

शासन के तीरदांज

वी. श्रीनिवास	- भला आदमी
अभय कुमार	- स्वच्छ छवि
अखिल अरोड़ा	- खिलाड़ियों का खिलाड़ी
अपर्णा अरोड़ा	- पंचों की राय
शिखर अग्रवाल	- आगाज तो अच्छा है
संदीप वर्मा	- कौशल निर्माण
कुलदीप रांका	- तकनिकी पर जोर
श्रेया गुहा	- गांव का विकास
आनंद कुमार	- जंगलराज
प्रवीण गुप्ता	- सड़कों का जाल
भास्कर आत्माराम सावंत	- स्वच्छ प्रशासन
अश्विनी भगत	- अकलियत का विकास
कुंजी लाल मीना	- हरफनमौला
अजिताभ शर्मा	- अंधरे से उजाले की ओर
आलोक गुप्ता	- प्रदूषण ही प्रदूषण
दिनेश कुमार	- हम करेंगे सुधार
राजेश कुमार यादव	- लाइन हाजिर
नवीन महाजन	- चुनाव की जिम्मेदारी
गायत्री ए. राठौर	- स्वस्थ राजस्थान
वैभव गलरिया	- विकास का बजट
टी. रविकांत	- खानों की कमाई
सुबीर कुमार	- सेहत का सवाल
भवानी सिंह देथा	- हम भी कम नहीं
डॉ जितेंद्र सोनी	- ये रहें या वो रहें, हम तो रहेंगे
विकास सीतारामजी भाले	- अब कोई डर नहीं
मंजू राजपाल	- अपने बूते पर
देबाशीष पृष्टि	- क्या कहें
नवीन जैन	- अपनी डफली
डॉ. पृथ्वीराज	- सही जगह पर
कृष्ण कुणाल	- उम्मीद की किरण
डॉ. नीरज कु. पवन	- ब्यूरोक्रेसी का चॉकलेटी बॉय
रवि जैन	- कोई चाहत नहीं
डॉ. समित शर्मा	- अपने दम पर
डॉ. रवि कुमार सुरपुर	- गाड़ी पटरी पर
अंबरीश कुमार	- दम तो है
डॉ. आरुषि अजय मलिक	- काम से काम
डॉ. जोगा राम	- पूरी मेहनत
पी रमेश	- चारों तरफ नज़र
पूनम	- कब फिरेंगे दिन
आरती डोगरा	- देख दिनन का फेर
डॉ. रोहित गुप्ता	- अब कोई डर नहीं
पुरुषोत्तम शर्मा	- राजस्थान रोडवेज का कुशल ड्राइवर
वी. सरवण कुमार	- अपनी डफली अपना राग
आनंदी	- हम किसी से कम नहीं
डॉ. टीना सोनी	- न किसी से लेना न देना
शुचि त्यागी	- किसी दवाब में नहीं
राजन विशाल	- काम से काम
अर्चना सिंह	- दबेंगे नहीं
कुमार पाल गौतम	- काम से संतुष्ट
डॉ. डैनियल सोनी	- कहाँ से कहाँ
नेहा गिरी	- राज सखी सरस सखी
विश्व मोहन शर्मा	- कोई नहीं
संदेश नायक	- दोस्तों के दोस्त, दुश्मनों के भी दोस्त
राकेश शर्मा	- फन्स गई जान झमेले में
शिवांगी स्वर्णकार	- सही जगह पर
अनुपमा जोरवाल	- पूरी मेहनत
हरि मोहन सिन्हा	- कोई जवाब नहीं
रुक्मणी रियार	- हम भी है मैदान में
ओम प्रकाश कसेरा	- न काहु से
सिद्धार्थ सिहाग	- समय के साथ चलो
हिमांशु गुप्ता	- हमारा काम भी देखो
हरजी लाल अटल	- होशियार
नथमल डिडेल	- तमाशा
एनजीक्या गोहेन	- कोई जब राह न आये
अरविंद कुमार पोसवाल	- पारदर्शी
महावीर प्रसाद मीना	- चंहुओर
डॉ. रश्मि शर्मा	- मेहनती
आश्रित खान	- किसी के फेर में नहीं
डॉ. मनीषा अरोड़ा	- दबाना इतना आसान नहीं
पुष्पा सत्यानी	- महानरेगा नहीं, वीबी रामजी कहो
पुखराज सेन	- जाने भी दो
श्रुति भारद्वाज	- फिर बहारे आएगी
चिन्मयी गोपाल	- डरना नहीं
शुभम चौधरी	- अब शकुन है
डॉ. भारती दीक्षित	- गुपचुप
सुरेश कुमार ओला	- गाड़ी चल रही है

बीजेपी

मदन राठौड़	- कंफ्यूज पालिटिशियन
वसुंधरा राजे	- जलवा बरकरार है
श्रवण बगड़ी	- देसी ब्वाय
मुकेश दाधिच	- कृष्ण का सुदामा
राजेन्द्र राठौड़	- कहां गये वो दिन
हमीद खां	- दुख भरे दिन बीते रे भैय्या
प्रमोद वशिष्ठ	- अंगद का पांव
अशोक परनामी	- बुझी अगरबत्ती
अरूण चतुर्वेदी	- झुनझुना
कैलाश चौधरी	- किसान केसरी
शंकर गोरा	- धुरंधर
सतीश पूनियां	- परफेक्ट मैन
भूपेंद्र सैनी	- हूं लाडे री बुआ
अजयपाल सिंह	- राजनीति का कुबेर
मिथलेश गौतम	- अनसुलझा सवाल
मदन प्रजापत	- डीबेट किंग
ज्योति मिर्धा	- बुझता दिया
बिहारी लाल विश्नोई	- जोशीला सिपाही
मुकेश पारीक	- कार्यालय मानिटर
अजीत मांडण	- अधूरी उम्मीद
रामलाल शर्मा	- वजूद की तलाश
सुरेंद्र पाल टीटी	- बूढ़ा घोड़ा
बिहारीलाल	- वक्त का मारा
कुलदीप धनखड़	- वजूद की तलाश
विजेंद्र पूनिया	- क्या हुकम है मेरे आका
एकता अग्रवाल	- पोस्टर पसंद नेत्री
अपूर्वा सिंह	- साइलेंट मोड
नाहर सिंह जोधा	- पालिटिशियन
श्याम अग्रवाल	- सजावटी फूल
अल्का मूंदड़ा	- ऊंचे अरमान
अमित गोयल	- अफरिपक्व राजनेता
	- पंप एंड शो

कांग्रेस

सचिन पायलट	- मेहनत करते रहो
गोविंद सिंह डोटासरा	- अभी तो वक्त सुपर-डुपर है
टीकाराम जूली	- कर्म पथ
अशोक गहलोत	- दिल्ली जयपुर के मौसम से परेशानी
हरीश चौधरी	- दिल्ली का चहेता
भंवर जितेन्द्र सिंह	- असम कैसे जीते
सी.पी.जोशी	- अवसर की प्रतीक्षा
शांति धारीवाल	- मीठे वचन निकल ही जाते है
विश्वेन्द्र सिंह	- झंडा फहरा दिया
राजेन्द्र पारीक	- चाणक्य
प्रमोद जैन भाया	- किस्मत का धनी
हेमाराम चौधरी	- जिले बदलने का बदला लूंगा
रामलाल जाट	- संगठन से निकलेगी राह
अर्जुन सिंह बामणिया	- मेरे पास आना पड़ा
महेन्द्रजीत सिंह मालवीय	- चौबे बन गए दुबे
अशोक चांदना	- राजदों से परेशान
मुरारीलाल मीणा	- पकड़ मज़बूत